"सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों की नीतियों एवं कार्यक्रमों में उपेक्षित बच्चों की भागीदारी" परियोजना के अन्तर्गत प्रकाशित

तितली

रंग बिरंगे पंखों से...

जुलाई – सितम्बर 2009

संपादक की कलम से...

प्रिय पाठकों,
नमस्कार,

तितली का यह पहला अंक प्रकाशित करते हुए हमें अति प्रसन्नता हो रही है। तितली के इस संस्करण में हमनें बच्चों के मन के भावों को जानने का प्रयास किया है। बच्चों का मन तितली के रंग बिरंगे पंखों के समान होता है। इन पंखों को लगाकर बच्चे ऊंची उड़ाने भरते हैं। हमनें बच्चों की उन्हीं कल्पनाओं को जानने का प्रयास किया है।

बच्चों की कल्पनाओं की उड़ानें एवं उनकी भावनाओं का आदर करते हुए बच्चों के विचारों को सभी के समक्ष पहुंचाने की हमारी यह भावना ही तितली को मूर्त रूप दे पाई है।

ऐसे बच्चे जो हमारी नजरों से अनछुए हैं और अपने विचारों को सबके सामने नही रख पाये हैं उनकी भावनाओं की कद्र करते हए तितली के माध्यम से आप तक पहुंचाने का प्रयास किया है।

हम उन सभी लोगों का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं जिनका इस प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से योगदान रहा है।

इस अंक के बारे में आपके बहुमूल्य सुझाव सादर आमंत्रित है...

आशीष त्रिपाठी, केन्द्र समन्वयक
'कट्स' मानव विकास केन्द्र
चित्तौड़गढ

म्हारी मायड़ जनम देता,सोचों घणों अरमान।
म्हारी उम्र है पढ़बा की, जाने हगली दुनिया

"सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों की नीतियों एवं कार्यक्रमों में उपेक्षित बच्चों की भागीदारी"

'कट्स' मानव विकास केन्द्र द्वारा आई.एन.जी.ओ पार्टनरशिप एग्रिमेण्ट प्रोग्राम (IPAP) के तहत् *"सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों की नीतियों एवं कार्यक्रमों में उपेक्षित बच्चों की भागीदारी परियोजना"* चलाई जा रही है, जिसमें उपेक्षित बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने का बीड़ा उठाया गया है। यह परियोजना कट्स इन्टरनेशनल द्वारा सेव द चिल्ड्रन–बाल रक्षा भारत के सहयोग से चित्तौड़गढ़ पंचायत समिति की सावा, सामरी, शंभूपुरा, घटियावली, ऐराल एवं नेतावल गढ़ पाछली ग्राम पंचायतों के 28 गाँवों में संचालित की जा रही है। परियोजना के माध्यम से वंचित बच्चों के अधिकारों को संरक्षित करते हुए समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

इस परियोजना का लक्ष्य है कि वर्ष 2012 तक राजस्थान के सामाजिक रूप से उपेक्षित बच्चों की स्थिति में सुधार लाना और उनकी आवाज को संस्थागत रूप से औपचारिक और अनौपचारिक संगठनों द्वारा सुना जाए और वरीयता प्रदान की जाए।

परियोजना का उद्देश्य राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले के 28 गाँवों के सामाजिक रूप से उपेक्षित बच्चों (अनुसूचित जाति/जनजाति) को सरकार दाता संस्थाओं और स्वैच्छिक संगठनों के विकास कार्यक्रमों, नीतियों और योजनाओं का लाभ दिलाना है, जिससे हम निम्न बदलाव ला सकें–

- राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले के 28 गाँवों में रहने वाले एस.सी./एस.टी. बच्चे औपचारिक और अनौपचारिक संगठनों को दिखने लगें और संस्थागत रूप से उनकी आवाज को सुना जाए तथा उन्हें पहचान मिले।
- उपेक्षित बच्चों के अधिकारों और जरूरतों पर कार्य करने के लिए हस्तक्षेप (नीति, कार्यक्रम तथा योजनाएं) का स्वरूप बनाया जाए।

अंधकार है जीवन म्हारो,
प्रकाशवान बणाओं।

भारत माता का बेटा ने
बाल मजदूरी छुड़ाओ।।

श्रीमती नर्बदा भाँभी
अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक)

छोड़ी झाड़ू पकड़ी कलम

चित्तौड़गढ़ पंचायत समिति का एक गाँव शम्भूपुरा जोकि चित्तौड़गढ़ निम्बाहेड़ा मार्ग पर बसा हुआ है। इस गाँव में विशेष रूप में नई आबादी शम्भूपुरा में बाल श्रम एक प्रमुख समस्या है। एक दिन कट्स की कार्यकर्ता बामनिया स्कूल पहुंची जहाँ पर मेला लगा हुआ था। मेला परिसर में एक 12 वर्षीय बच्चा झाड़ू लगा रहा था। कट्स कार्यकर्ता ने उसके करीब जाकर पूछताछ की तो उसने हिचकिचाते हुए बताया कि वह नई आबादी शम्भूपुरा में रहने वाला अजय है। उसके पिताजी विकलांग हैं और माता अंधी है एवं उसके चार बहनें एवं दो भाई हैं। उसके साथ के मित्रों ने पढ़ाई छोड़ दी इसलिए उसने भी स्कूल जाना बंद कर दिया है।

दूसरे दिन कट्स कार्यकर्ता अजय के घर पहुँची और उसके पिता श्री पूरणमल रेनवाल से सम्पर्क किया। अजय के पिता से पता चला कि अजय ने 2 साल पहले ही अपनी पढ़ाई छोड़ दी। उनके घर की आर्थिक स्थिति ठीक नही होने के कारण अजय को मजदूरी के लिए महाराष्ट्र भेजा था। महाराष्ट्र में उसने डेढ़ साल तक काम किया लेकिन गलत संगत में पड़ जाने के कारण वापस बुलाना पड़ा। अजय आजकल पास के ही रेलवे स्टेशन पर डिब्बों से कोयला खाली करने एवं लोगों के घर पर झाड़ू लगाने का काम करता है। रोज दो तीन घंटे काम करके जो भी पैसा लाता है उससे घर का गुजारा चलाने में मदद मिलती है।

कट्स कार्यकर्ता द्वारा बार बार समझाने पर अजय पढ़ने के लिए राजी हुआ। बेटे की इच्छा से प्रभावित हो पूरण ने भी अपने बच्चे को स्कूल में भर्ती कराने की सहमति दे दी। अजय की इच्छा एवं कट्स की मेहनत रंग लाई और अजय ने नई आबादी शम्भूपुरा में कक्षा दो में पुनः प्रवेश लिया। अब अजय ने झाड़ू लगाना छोड़कर कलम थाम ली और अपना भविष्य संवारने हेतु नियमित रूप से स्कूल जाने लगा है।

अन्दर के पृष्ठ में

- नेता
- पहेलियां
- गुड़िया ने पहचाना खुद को
- मुख्य गतिविधियां
- मीडिया क्लिप

मेरे सपनों का स्कूल

अच्छा स्कूल स्वच्छ होना चाहिए। स्कूल में कमरे साफ सुथरे व स्वच्छ होने चाहिए। प्रतिदिन स्कूल के कमरों में झाड़ू–पोंछे लगाकर सफाई होनी चाहिए।

स्कूल में पेड़ पौधों को स्वच्छ रखने के लिए उन्हें रोजाना पानी पिलाना चाहिए। खेलने का मैदान साफ सुथरा होना चाहिए। मैदान में कंकड़ पत्थर नहीं होने चाहिए। स्कूल चार दिवारी से घिरा हो। उसमें फूलों की बगिया लगी हो जिसके चारों ओर बाड़ लगी हो। सबको उसकी देखभाल करनी चाहिए।

प्रतिदिन बच्चे साफ सुथरे कपड़ों में नहा धोकर स्कूल आऐं। स्कूल में टीचर उपलब्ध हों। स्कूल में पानी की उपयुक्त व्यवस्था होनी चाहिए। पानी की निकासी के लिए नालियाँ बनी होनी चाहिए। स्कूल में लड़के और लड़कियों के लिए अलग–अलग शौचालय की व्यवस्था होनी चाहिए।

मेरे स्कूल का नाम राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय खेरी है। हमारा स्कूल आठवीं तक है।

रीना धाकड़
कक्षा आठवी

बाल प्रतिभाएँ

गुटखा खाना छोड़ दिया

जब से गुटखा खाने लगा
मजा उसको बड़ा आने लगा।।
थोड़े दिन ही आया मजा।
बाद में वो पछताया बड़ा।।
नाश हो गया शरीर सारा।
बचने का न कोई चारा।।
जब खाने को नहीं मिलता गुटखा।
शरीर न उसका हिलता डुलता।।
जब चोरी करके गुटखा खाता।
नहीं खाता तो पछताता।।
फिर एक दिन संकल्प किया।
गुटखा खाना छोड़ दिया।।
अच्छा बहुत ही काम किया।
जो गुटखा खाना छोड़ दिया।।
सबको है अब उसका पैगाम।
गुटखा खाना नहीं है अच्छा काम।।

परियोजना के तहत् जब गाँव में घूमा गया तो यह देखने में आया कि बहुत से बच्चे ऐसे हैं जो कि गुटखा खाने की लत से ग्रसित हैं। बच्चों को यह लत उनके परिवार के बड़े लोगों या दोस्तों से लगी है। इन्हीं बच्चों के छोटे–छोटे भाई बहिन भी अपने बड़े भाई बहनों को गुटखा खाते देखते हैं। कल को वह भी इस बुराई के शिकार होंगें। शायद आज आप यह जानने में असमर्थ हैं कि गुटखा खाने से क्या नुकसान है, परंतु हो सकता है कि कल जब आपको कैंसर, गुर्दे व जबड़े खराब होना या गालों का गलना आदि से शरीर का नुकसान होगा तो आप बहुत पछताएंगे। परंतु शायद उस वक्त तक बहुत देर हो चुकी होगी। अतः सभी बच्चों व बड़ों से निवेदन है कि ऐसी आदत विकसित न करें और न ही ऐसी कोई आदत अपने छोटे भाई बहनों में विकसित होने दें। बच्चों की इस चिंताजनक स्थिति हेतु यह कविता उड़ान पत्रिका से साभार ली गई है।

नेता

हमारे देश में जनता का शासन है। हमारे देश, राज्य तथा जिले में हर पाँच साल बाद चुनाव होता है। जनता अपने पसन्द के नेता को वोट देती है जिससे नेता बदलता रहता है। कांग्रेस तथा भाजपा दोनों के बीच लड़ाईयां होती हैं तथा दोनों में से एक जीतता है। कभी कांग्रेस हारती है तो कभी भाजपा हारती है।

आजकल तो नेता रूपये, शराब, वस्तु आदि जनता को देकर उसे गुमराह कर वोट लेते हैं, और कुछ नेता तो जनता से वादे कर देते हैं, पर जीत जाने के बाद भूल जाते हैं तथा 5 साल बाद जब वापिस वोट का समय आता है, तब उन्हें याद आता है। तब वह उस काम को थोड़ा–बहुत कर वापिस जीत जाते हैं। इस प्रकार वह काम कई सालों तक अधूरा रहता है तथा वह जीतता चला जाता है उदाहरण के तौर पर डॉ. मनमोहनसिंह आज देश के दूसरी बार प्रधानमन्त्री बने हैं। अभी भी भारत तथा चीन के बीच युद्व हो रहा है तथा चीन की घुस –पैठ भारत की सीमा के पास हो रही है। अब भी प्रधानमन्त्री देश–वासियों को शांत रहने की कह रहे हैं। यहां तक की पत्रकार फोटो खींचकर बता रहे हैं कि वहां सैनिकों व हेलीकोफटर को भेजो। पर फिर भी हमारी सरकार कुछ नहीं कर रही है ।

महेन्द्र सिंह राजपूत, कक्षा आठवीं
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय खरड़ीबावड़ी

पहेलियाँ

1. ऊँट की बैठक हिरण की चाल,
   वह कौन सा जानवर जिसके दुम न बाल।।

2. हरी थी मन भरी थी, लाल मोती जड़ी थी,
   राजा जी के खेत में दुशाला ओढ़े खड़ी थी।।

3. ऐसा मिलकर शब्द बनाएँ,
   फूल मिठाई और फल बनजाए।।

उत्तरः मेंढक, तोता, गुलाबजामुन

गुड़िया ने पहचाना खुद को

गुड़िया एक गरीब घर की भली लड़की थी। उसकी माता दिन भर घर के काम में व्यस्त रहती और गुड़िया को भी अपने साथ काम में लगाए रखती। गुड़िया के दो भाई थे बबलू और राजू। बबलू 10वीं कक्षा में अध्ययनरत था और राजू तीन साल का था। गुड़िया के पापा शहर से बाहर नौकरी करते थे।

गुड़िया देखने व सुनने में बहुत सुंदर व शांत स्वभाव की थी। दिन भर वह राजू को संभालती व घर के काम मे लगी रहती जिस कारण वह अपने पर ध्यान नहीं दे पाती। बाहर वह बच्चों को खेलता व स्कूल जाता देखकर सोचती कि काश वह भी स्कूल पढ़ने जाती व बाहर जाकर उन लोगों के साथ खेल पाती। परंतु उसका पूरा दिन माँ के साथ हाथ बंटाने, राजू को संभालने और बबलू को समय पर खाना देने व उसकी जरूरतों का ध्यान रखने में ही निकल जाता।

एक दिन गुड़िया के घर उसकी मौसी आई जो दिल्ली में रहती थी। मौसी के जिद करने पर गुड़िया की माँ ने गुड़िया को मौसी के साथ भेज दिया। मौसी के वहां गुड़िया की हम उम्र लक्ष्मी नाम की एक लड़की कार्य करती थी। लक्ष्मी अनाथ थी और 15 साल की उम्र से ही गुड़िया की मौसी के वहां रह रही थी। गुड़िया की मौसी ने पास ही के स्कूल में उसका नाम दर्ज करवा रखा था। स्कूल से आने के बाद लक्ष्मी घर का काम निपटाती थी। गुड़िया की हम उम्र होने के कारण उसकी गुड़िया से अच्छी दोस्ती हो गई थी। गुड़िया दिनभर लक्ष्मी के साथ रहती। जब लक्ष्मी स्कूल जाती तब वह अपनी मौसी के साथ बातें करती और टीवी व आस पास के बच्चों के साथ अपना समय बिताती। लक्ष्मी के स्कूल से आने के बाद गुड़िया उसके साथ काम में हाथ बंटाती।

बाल विवाह

हमारे देश में बाल विवाह तब से चल रहा है जब हमारे देश में मुगल शासक राज करते थे। हमारे देश में बाल विवाह कानूनी अपराध है। बाल विवाह करने से लड़के या लड़की की जिंदगी बिगड़ जाती है। हमारे समाज में कुछ लोग ऐसे भी होते है जो चोरी छुपे अपने बच्चों की शादी कर देते हैं। शादी की सही उम्र लड़की के लिए 18 साल व लड़के के लिए 21 साल है। बाल विवाह करवाने पर लड़के व लड़की के माता पिता, पण्डित को अदालत दण्ड देती है।

बाबू लाल भील
कक्षा आठवी

एक दिन गुड़िया और लक्ष्मी छत पर कपड़े सुखाने गई। दोनो आपस में बातें कर रही थी और गुड़िया की मौसी छत पर बैठी धूप सेक रही थी और चुपचाप दोनों की बातों का आनंद ले रही थी। बातों ही बातों में लक्ष्मी ने गुड़िया से पूछा तुम्हारी कितनी बहनें हैं। गुड़िया ने जवाब दिया मैं अकेली हूँ और मेरे दो भाई हैं। लक्ष्मी ने अचंभे से कहा कि वाह! तुम अकेली हो तो तुम्हें घर में सब बहुत लाड़ करते होंगे और तुम सबकी लाड़ली होगी। फिर तो तुम दिनभर पढ़ती व खेलती होगी। गुड़िया कुछ न कह सकी और उसकी आँखें भर आई। उसने कहा नहीं मैं स्कूल नहीं जाती क्योंकि, मुझे अपने भाइयों की देखभाल करनी होती है व अपनी माँ का घर में हाथ बटाना होता है। लक्ष्मी को बड़ा आश्चर्य हुआ। गुड़िया की मौसी को भी सुन कर बड़ा दुख हुआ पर वह कुछ नहीं बोली।

दिन बीतते गए गुड़िया का मौसी के वहां मन लग गया। वह लक्ष्मी के साथ अक्षरों का ज्ञान भी लेने लगी। एक दिन गुड़िया का भाई बबलू मौसी के घर आया। गुड़िया उसे देख बहुत खुश हुई। उसने बबलू को बिठाया और पानी वगैरह पिलाया। गुड़िया की मौसी ने सभी का हाल लेते हुए बबलू से आने का कारण पूछा। बबलू ने बताया कि वह गुड़िया को ले जाने आया है। गुड़िया बबलू की बात सुन रूआंसी हो गई क्योंकि उसका मन मौसी के वहां लग गया था और वह जाना नहीं चाहती थी। मौसी सब जानते हुए भी कुछ नहीं कर सकती थी भला वह पराई लड़की को कितने दिन घर रख सकती थी। आज नहीं तो कल उसे उसके घर भेजना ही था। मौसी ने गुड़िया से कहा गुड़िया अपना सामान बाँध लो बबलू तुम्हें लेने आया है।

गुड़िया अनचाहे मन से कमरे में गई और उसने अपना सामान समेटकर अपना बैग जमाया। भरे मन से बैग लेकर वह विदाई लेने बाहर आई और लक्ष्मी के गले मिली। लक्ष्मी भी गुड़िया के जाने से दुखी थी, क्योंकि उसकी अच्छी सहेली उसे छोड़कर जा रही थी। कम ही समय में लक्ष्मी का भी लगाव गुड़िया से हो गया था। गुड़िया से वह अपने सारे मन की बात करती थी और गुड़िया भी अपने मन की बात लक्ष्मी से कहती थी। गुड़िया ने जाने के लिए मौसी के भी पाँव छु। मौसी चाहते हुए भी गुड़िया को नहीं रोक पा रही थी। मौसी को भी गुड़िया के जाने का बड़ा दुख हो रहा था।

गुड़िया की मौसी दुखी मन से गुड़िया व बबलू के साथ दरवाजे तक आई। गुड़िया यह सोच रही थी की अब मौसी मुझे रोक लेगी और जाने नहीं देगी। बबलू के साथ जैसे ही वह ऑटो में बैठने लगी वह पलटकर दौड़कर आई और मौसी के गले लग फूट–फूटकर रोने लगी। ''मौसी मैं न जाऊंगी मैं आपके पास ही रह कर पढ़ाई करूंगी'' और बबलू से कहने लगी भईया माँ से कह देना में मौसी के पास ही रहूँगी। बबलू गुड़िया को देख अचंभित रह गया। जो आज तक चुपचाप रहती थी, आज वह अपने भाई के सामने बोलने की हिम्मत कर पाई। मौसी ने गुड़िया का उत्साह देख बबलू को समझाया और बबलू से जाने के लिए कहा। मौसी ने कहा मैं तेरी माँ से बात कर लूंगी और गुड़िया कहीं नहीं जाएगी। वह मेरे पास ही रह कर पढ़ाई करेगी। गुड़िया को उस दिन लगा कि उसकी भी कुछ इच्छाएँ व तमन्नाएं है जिन्हें वह इतने सालों से अपने मन में दबाती आई थी। शायद वह आज उसकी मौसी के वहाँ आकर उजागर हो पाई है। आज गुड़िया खुश है कि वह अपने को पहचान पाई है और अपनी भावनाएं सबके सामने रख पाई है।

वन्दना चौहान
कट्स मानव विकास केन्द्र

हैण्ड पंप पर शेर

हैण्ड पम्प पर खड़ा हुआ था
एक सुनहरा शेर।
मारे प्यास के सिकुड़ गया था।
उसका लम्बा पेट।

वहाँ पे आया एक टिड्डा
ज्यों ही दिखा वो प्यारा शेर
दिया जो धक्का पम्प से निकला
पानी तीनेक सेर।।

पिया जो पानी मोटा हो गया।
उसका लम्बा पेट
फिर भी यारो
टिड्डे के संग उड़ा सुनहरा शेर

संकलित
एकलव्य पब्लिकेशन

मुख्य गतिविधियाँ

परियोजना शुभारंभ बैठक

सचेतक आमुखीकरण एवं प्रशिक्षण कार्यशाला

परियोजना मासिक समीक्षा एवं नियोजन बैठक

ग्राम बैठकें

बाल सभाएँ

बालिका शिक्षा प्रोत्साहन अभियान

बच्चों के बारे में

बच्चों के बारे में बनाई गई ढेर सारी योजनाएँ
ढेर सारी कविताएँ लिखी गई बच्चों के बारे में।

बच्चों के लिए
खोले गए ढेर सारे स्कूल
ढेर सारी किताबें बांटी गई बच्चों के लिए

बच्चे बड़े हुए
जहाँ थे, वहाँ से उठ खड़े हुए बच्चे

बच्चों में से कुछ बच्चे
हुए बनिया हाकिम और दलाल
हुए मालामाल और खुशहाल

बाकी बच्चों ने सड़क पर कंकड़ कूटा
दुकानों में प्यालियाँ धोई
साफ किया टट्टीघर
खाए तमाचे
बाजार में बिके कौड़ियों के मोल
गटर में गिर पड़े

बच्चों में कुछ बच्चों ने
आगे चलकर
फिर बनाई योजनाएँ
बच्चों के बारे में
कविताएँ लिखी
स्कूल खोले
किताबें बाँटी
बच्चों के लिए

संकलित
एकलव्य
पब्लिकेशन

मीडिया क्लिप

बालिकाओं ने निकाली जागरुकता रैली

बड़ का अमराना व नीम का अमराना में बालिका प्रोत्साहन अभियान का आगाज

बाल अधिकार संरक्षण के लिए हो सामूहिक प्रयास

भास्कर न्यूज. चित्तौड़गढ़

बच्चों के अधिकारों का हो संरक्षण

उपेक्षित बच्चों की भागीदारी परियोजना का शुभारंभ

गरीब एवं उपेक्षित बच्चों के अधिकारों ... के लिए विशेष प्रयास करने ...

अधिकारों के संरक्षण की आवश्यकता

परियोजना शुभारम्भ बैठक आयोजित

न्यूज सर्विस

चित्तौड़गढ़, 29 जुलाई। उपेक्षित बच्चों के अधिकारों के संरक्षण के लिए विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है। इसके लिए सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों की नीति एवं कार्यक्रम में इन बच्चों को प्राथमिकता देनी चाहिए। उक्त विचार सामाजिक विकास के क्षेत्र में कार्यरत स्वयं सेवी संगठन कट्स इन्टनेशनल द्वारा रावला सेंती में ...

समन्वयक अमित चौधरी ने बताया कि सेव द् चिल्ड्रन बाल रक्षा भारत के सहयोग से सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों की नीतियों एवं कार्यक्रमों में उपेक्षित बच्चों की भागीदारी परियोजना के शुभारम्भ पर सर्व शिक्षा अभियान के अतिरिक्त जिला समन्वयक सुरेश शर्मा ने कहा कि वर्तमान में बालिकाएं समाज में वंचितों में भी वंचित है। बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ने में उनकी माताएं प्रभावी भूमिका निभा ...

बालिका शिक्षा के लिए निकाली प्रोत्साहन रैली

न्यूज सर्विस

दो दिवसीय सचेतक प्रशिक्षण

न्यूज सर्विस

चित्तौड़गढ़, 31 जुलाई। ...क शिक्षा को बढ़ावा देने में ...य की भागीदारी विशेषकर ...की भागीदारी आवश्यक है, ... विद्यालय विकास एवं ...न समिति एवं बाल पंचायत ...क्रियता से बढ़ाई जा सकती ...

...ह विचार स्वयं सेवी संगठन ... इन्टरनेशनल द्वारा रावला ...में आयोजित सचेतक प्रशिक्षण ...मापन पर उभर कर आये। ...के समन्वयक अमित चौधरी ...

मदन कीर, संजय मोड़, नीतू जोशी, मीना पारीक, आशिष त्रिपाठी ने गुणात्मक प्रारम्भिक शिक्षा में अभिभावकों, अध्यापकों, बच्चों व सचेतकों की भूमिका, बाल अधिकार, जीवन कौशल शिक्षा विषय पर जानकारी दी।

प्रशिक्षण में नाबार्ड के जिला विकास प्रबन्धक पंकज यादव ने कहा कि बच्चों के विकास में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है, इसलिये महिलाओं में बचत की आदत डालनी चाहिए। परियोजना प्रभारी संजय मोड़ के ...